"प्राक्कथन" Introduction

श्रद्धेय डॉ.अम्बाशंकर नागर, एम.ए., पीएच.डी. : रीडर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गुजरात युनिवर्सिटी : द्वारा निर्देशित यह अध्ययन– "हिन्दी साहित्य को गुजरात के सन्त कवियों की देन" अधिनिबन्ध के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है ।

भारतीय साहित्य-क्षेत्र में सन्तों का योगदान तो अपूर्व है ही, सांस्कृतिक नेता के रूप में भी इनका स्थान अप्रतिम है । भावात्मक एकता का जो प्रयास आज देश के नेताओं द्वारा हो रहा है, गत पाँच शताब्दियों से वही प्रयास इस देश के सन्तों द्वारा होता आया है । इन्होंने लौकिक राग रंग से विरक्त होते हुए भी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को साधना की भूमि पर पल्लवित किया । सन्तों का यह सांस्कृतिक आन्दोलन अखिल भारतीय है । भाव जगत के इन सांस्कृतिक नेताओं की वाणी, जो विक्रम की २० वीं शती के अन्तिम चरण तक साहित्यिक दृष्टि से उपेक्षित रही, पिछले पाँच दशकों से इसे प्रकाश में लाने का पाश्चात्य एवं भारतीय मनीषियों ने स्तुत्य प्रयत्न किया है । इन बानियों के प्रकाशन से विविध दृष्टि-बिन्दुओं को लेकर इनके आलोचनात्मक अध्ययन को विशेष गति मिली है । इस क्षेत्र में अब तक शोधार्थियों ने अनेक व्यष्टिमूलक, समष्टिमूलक तथा तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किये हैं । फिरभी, क्षेत्रीय अध्ययन की दृष्टि से शोधकार्य की आवश्यकता अब भी बनी हुई है । भारतीय सन्त साहित्य में ऐसे अनेक अनमोल रत्न भरे पड़े हैं जो अब तक उपेक्षित रहे हैं । कुछ तो ऐसे हैं, जिन्हें कबीर और सुन्दरदास जैसे सन्तों की कोटि में बिठाया जा सकता है । देश्य भाषा में वे भले ही परिचित एवं पूज्य रहे हों, किन्तु हिन्दी की समस्त निर्गुण काव्यधारा में संभवतः उन्हें भुलाया गया है ।

आज जबकि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर बिठाकर उसे व्यापक बनाने का अथक श्रम उठाया जा रहा है तथा अहिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में अगणित हिन्दी-प्रेमी, संस्थाएँ एवं प्रचारक संलग्न हैं, हिन्दी को अपनी वाणी का माध्यम बनाने वाले इन क्षेत्रीय सन्तों की उपेक्षा कर कदाचित

हम अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफल नहीं हो सकेंगे । हिन्दी का घर-घर अलख जगाने वाले गुजरात के इन सन्तों की वाणी वस्तुत: भारतव्यापी सन्त-परम्परा की ही एक अविच्छेद्य कड़ी है । क्षेत्रीय अध्ययन की दृष्टि से इस प्रकार के महत्व को स्वीकार करते हुए प्रस्तुत अनुसन्धान का प्रतिपाद्य विषय है — गुजरात के सन्तों की हिन्दी वाणी का अनुशीलन और उसकी उपलब्धियाँ । इस दिशा में अब तक जो कार्य हुआ है वह प्राय: गवेषणात्मक ही विशेष रहा । साहित्य के विविध मानदंडों की कसौटी पर संतों की उपलब्ध हिन्दी-वाणी का मूल्यांकन लेखक का प्रथम, मौलिक एवं विनम्र प्रयास है ।

प्रस्तुत अधिनिबन्ध सुविधा की दृष्टि से सात परिच्छेदों में विभक्त है । इनके अतिरिक्त 'विषय प्रवेश' के अन्तर्गत सामग्री संकलन के सूत्रों का परिचय देते हुए विषय का स्पष्टीकरण करके उसकी मर्यादाएँ निश्चित की गयी हैं ।

प्रथम परिच्छेद में गुजरात की ज्ञानमार्गी शाखा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत की गयी है । उत्तर के समस्त धार्मिक एवं राजनीतिक प्रवाहों से प्रभावित होते हुए भी गुजरात की ज्ञानमार्गी धारा की कुछ निजी प्रेरक परिस्थितियाँ रही हैं, जिन्हें प्रस्तुत करने का प्रयत्न इस परिच्छेद में किया गया है ।

द्वितीय परिच्छेद में गुजरात के प्रमुख सन्त सम्प्रदायों का अध्ययन किया गया है । वैष्णव, जैन तथा स्वामीनारायण सम्प्रदायों का संतमत से सीधा सम्बन्ध न होने के कारण उनका अध्ययन इस प्रबन्ध में नहीं किया जा सका । सन्त सम्प्रदायों में भी जिन छोटे-मोटे सम्प्रदायों की कोई निश्चित परम्परा उपलब्ध नहीं होती और जिनके कवियों की हिन्दी वाणी भी अप्राप्य है उन्हें इस अध्ययन के अन्तर्गत नहीं लिया जा सका ।

तृतीय परिच्छेद के अन्तर्गत इस अंचल के लगभग ७५ सन्त कवियों की अधिकृत जीवनी तथा उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है । क्षेत्रीय गवेषणा की दृष्टि से प्रस्तुत अधिनिबन्ध में यद्यपि छोटे बड़े १८८ सन्तों का

उल्लेख हुआ है जिनकी एक तालिका परिशिष्ट में जोड़ दी गयी है । ये सभी सन्त ऐसे हैं जिन्होंने गुजराती के साथ-साथ हिन्दी में भी लिखा है । जिन सन्तों ने केवल गुजराती में ही रचनाएँ की हैं, उन्हें यहाँ सम्मिलित नहीं किया जा सका । अतः संभव है गुजरात के अनेक उच्चकोटि के संत विषय की सीमा के अन्तर्गत न आने के कारण छूट भी गये हों । आलोच्य सन्तों का मूल्यांकन भी उनकी उपलब्ध हिन्दी वाणी के आधार पर ही किया गया है । अतः यह भी संभव है कि किसी संत का गुजराती में उच्चकोटि का स्थान होने पर भी हिन्दी वाणी के अध्ययन के आधार पर उसे हिन्दी कवि के रूप में उतना महत्त्व न मिल सका हो । इसी प्रकार गुजराती में सामान्य स्थान-प्राप्त कवि भी यदि हिन्दी में उच्चकोटि की रचनाएँ करता पाया गया है तो उसे ऊँचा स्थान पाने का अधिकारी समझा गया है ।

चतुर्थ परिच्छेद में गुजरात के हिन्दी-सेवी सन्तों की दार्शनिक विचारधारा का अध्ययन किया गया है । अद्वैत के उपासक इन सन्तों की साधना जहाँ एक ओर आचार्य गौडपाद के अजातवाद तथा शंकराचार्य के मायावाद से प्रभावित है वहाँ दूसरी ओर प्राणनाथ जैसे सन्तों पर श्री. रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत तथा अखा जैसे ज्ञानी-सन्तों पर सूफी प्रेम-मार्ग का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है । तात्पर्य यह कि इन सन्तों पर विभिन्न दर्शन-पद्धतियों का प्रभाव बताते हुए उनकी सैद्धान्तिक विचारधारा एवं भक्ति-साधना का अध्ययन प्रस्तुत परिच्छेद के अन्तर्गत किया गया है ।

पंचम् परिच्छेद में साहित्य के विविध मानदंडों के आधार पर गुजरात की हिन्दी संतवाणी का मूल्यांकन किया गया है । यह सच है कि सन्तों का काव्य साहित्य की कसौटी पर पूरी तरह खरा नहीं उतर सकता । उसे उस तरह कसा भी नहीं जा सकता क्योंकि सन्तों का लक्ष्य न तो काव्य-परम्परा में रहकर कविता करना था और न उस प्रकार का ज्ञानार्जन ही उन्होंने किया था । फिरभी, हृदय एवं अनुभव की प्रयोगशाला में बैठकर इन्होंने जो अभिव्यक्ति की उसमें सहज-भावेन प्रतीक, छन्द, अलंकार, संगीत, रस आदि की अवतारणा हुई है । इसमें का अधिकांश साहित्य यद्यपि दार्शनिकता से

बोझिल अवश्य है, तथापि संतसाहित्य का वह रागात्मक अंश जो सिद्धान्त, नीति अथवा उपदेश के अन्तर्गत नहीं आता निश्चय ही साहित्य की कोटि में स्थान पाने योग्य है । काव्यत्व की दृष्टि से गुजरात की हिन्दी सन्तवाणी के ऐसे ही कुछ अंशों को प्रस्तुत करने का प्रयत्न इस परिच्छेद में किया गया है ।

षष्ठ परिच्छेद में गुजरात के सन्तों द्वारा प्रयुक्त विविध काव्य-प्रकारों का परिचय दिया गया है । साखी, पद और रमैनी के अतिरिक्त इन सन्तों ने बारमासी, गरबी-गरबा, कक्का, धोलु, आरती, जकड़ी, लावणी, होरी, और गज़ल आदि मुक्तक काव्य-रूपों तथा चरितु, मसनवी, गीता, गोष्ठी और कड़वा आदि प्रबन्ध काव्य-रूपों का प्रयोग किया है ।

सप्तम् परिच्छेद के अन्तर्गत प्रतिपाद्य विषय की उपलब्धियों पर विचार किया गया है । अर्थात् गुजरात के इन सन्तों की भाषा, साहित्य एवं संस्कृति की दृष्टि से हिन्दी को जो देन है, उसका निष्कर्ष यहाँ प्रस्तुत किया गया है । परिशिष्ट के अन्तर्गत हिन्दी-सेवी सन्त कवियों की नामावली, गुजराती सन्तों द्वारा रचित हिन्दी ग्रन्थों की सूची, पारिभाषिक शब्दावली तथा संदर्भ-ग्रन्थ-सूची जोड़ दी गयी है ।

अन्त में, श्रद्धेय गुरुदेव डॉ.अम्बाशंकर नागर के प्रति मैं किन शब्दों में अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करूँ जिन्होंने प्रस्तुत अध्ययन के निर्देशन में निरन्तर तीन वर्षों का अथक श्रम तो उठाया ही है, जिनके अपूर्व स्नेह और अटूट आत्मीयता की छाया में इस दुर्गम पंथ की कठिनाइयों का अनुभव ही नहीं कर सका । आचार्य कुँवर चन्द्रप्रकाशसिंह : अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, म.स.विश्व विद्यालय, बड़ौदा :, आचार्य विनय मोहन शर्मा : अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय, कुरुक्षेत्र : तथा अन्य गुरुजनों के प्रति लेखक हृदय से आभारी है जिनके अपूर्व सुझावों तथा आशीर्वादों से वह सदैव लाभान्वित होता रहा है । साथ ही, लेखक ने अपने विषय की उपादेयता में जिन विद्वानों एवं उनकी कृतियों का लाभ प्रत्यक्ष अथवा परोक्षरूपेण उठाया है उन सभी के प्रति वह अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है ।

— रामकुमार गुप्त,
भारतीय विद्या भवन,
डाकोर :जि.खेड़ा: गुजरात ।